

डॉ रुचिरा ढींगरा

कबीर परिचय:- और कबीर के राम

भक्ति कालीन ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक कबीर धर्म निरपेक्ष थे। इनका जन्म काशी में माना जाता है इस तथ्य की उन्होंने भी पुष्टि की है -

" काशी में परगट भये ,रामानंद चेताये "

उन्होंने अपनी वाणी द्वारा सामाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांडों, अंधविश्वासों की निंदा की। किंवदंती है कि ये वैष्णव संत आचार्य रामानंद का शिष्यत्व चाहते थे अतः उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए एक पहर रात रहते ही पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े। गंगास्नान करने के लिये सीढ़ियां उतरते रामानन्द जी का पैर कबीर पर पड़ा। उनके मुख से तत्काल 'राम-राम' शब्द निकला जिसे कबीर ने दीक्षा-मन्त्र मान लिया।

कबीर मानते थे कि मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है अतः वे जीविकोपार्जन के लिए कबीर जुलाहे का काम करते थे। एक अन्य किंवदंती के अनुसार कबीर लोक प्रचलित मान्यता कि 'काशी में मरने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर नरक मिलता है' को गलत सिद्ध करने के लिए अपने अंतिम समय मगहर चले गए थे।

भाषा:-

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी हैं। वे घूमते हुए जहां भी निकल जाते थे वहीं की बोलियों (राजस्थानी, हरियाणवी, खड़ी बोली, पंजाबी, अवधी, ब्रज आदि) में निहित शब्दों को अपनी भाषा में जोड़ लेते थे। इनकी भाषा की इसी सहजता के कारण जनसामान्य इनसे सहज संबंध स्थापित कर सका।

कृतियां:-

इनकी वाणियों का संग्रह " बीजक " है। जिसके तीन मुख्य भाग हैं :

1.साखी

2.सबद (पद)

3.रमैनी

साखी: संस्कृत 'साक्षी', शब्द का विकृत रूप। यह धर्मोपदेश के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। अधिकांश साखियां दोहों में लिखी गयी हैं। कबीर की वाणी, मान्यताएं साखी में हैं। कबीर की प्रेम संबंधी मान्यताएं संबद में हैं जो गेय पद हैं इनमें संगीतात्मकता, भावात्मकता की प्रधानता होती है। रहस्यवादी और दार्शनिक विचार रमैनी चौपाई छंद में हैं। कबीर को अक्षर ज्ञान नहीं था।

'मसि कागद छूवो नहीं, कलम गही नहीं हाथ। उनकी वाणी को कालांतर में उनके शिष्यों द्वारा लिपिबद्ध किया गया।

कबीर ऐकेश्वर को मानते थे और अवतार, मूर्त्तिपूजा, रोज़ा, ईद, मस्जिद, मंदिर आदि को वे व्यर्थ के कर्मकाण्ड मानते थे।

'हरिमोर पिउ, मैं राम की बहुरिया'

अथवा

'हरि जननी मैं बालक तोरा'।

अथवा

"बडा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर "

उन्होंने हिन्दू मुस्लिम दोनों समुदायों में व्याप्त अंधविश्वासों पर व्यंग्य किया।

पाहन पूजे हरि मिलें, तो मैं पूजाँ पहारा। वा ते तो चाकी भली, पीसी खाय संसार। "

तथा

"कांकर पाथर जोरि के मस्जिद ली चिनाय।

ता चढा मुल्ला बांग दे का बहरा हुआ खुदाय।।"

उनकी भाषा सरल, सुबोध थी जिससे सामान्य जन भी उससे तादात्म्य स्थापित कर सके।

कबीर के राम :-

कबीर के राम अगम, सृष्टि के कण-कण में निवास करने वाले हैं। वे दशरथनन्दन राम, इस्लाम के ऐकेश्वरवादी, अल्लाह भी नहीं हैं। वे परम सत्य है।

" व्यापक ब्रह्म सबनिमें एकै, को पंडित को जोगी। रावण-राव कवनसूं कवन वेद को रोगी। "

उनके राम निराकार, कल्पनातीत, व्यापक, सर्वशक्तिमान, अलख, अविनाशी, हैं।

कबीर ने यद्यपि 'निर्गुण राम' शब्द का प्रयोग किया है तथापि उनके राम निर्गुण-सगुणातीत हैं। उनके मतानुसार परमतत्व ईश्वर को रूप, नाम, गुणादि सीमाओं में बाँटकर देखना संकीर्णता है।

—'निर्गुण राम जपहु रे भाई'

अपने राम के लिए उन्होंने 'रमता राम' कहा है जिनके साथ वे सहज मानवीय संबंध स्थापित कर लेते हैं। कबीर के राम कभी प्रेमी या पति (माधुर्य भाव), कभी स्वामी (दास्य भाव), कभी मां (वात्सल्य मूर्ति) बनते हैं।

“संतौ, धोखा कासूं कहिये। गुनमैं निरगुन, निरगुनमैं गुन, बाट छांड़ि क्यूं बहिसे!”

कबीर के जीवन का ध्येय सत्य की खोज था। उनके राम केवल साधना के प्रतीक हैं। भाव से ऊपर उठकर महाभाव या प्रेम के आराध्य हैं।

‘प्रेम जगावै विरह को, विरह जगावै पीउ, पीउ जगावै जीव को, जोइ पीउ सोई जीउ’ - (जो पीउ है, वही जीव है)।

उनके अनुसार पोथी पढ़ कर कोई इस सत्य को नहीं जान सकता। इसका ज्ञान 'ढाई आखर प्रेम' के आचरण से ही संभव है।

उनके कथनानुसार जीवन में प्रेमाचरण ही सतत सत्य साधना है। परमात्मा और आत्मा में अंश अंशी भाव होता है।

"जोई पीउ है सोई जीउ" है।

तथा

"जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी

फूटा कुम्भ जल जलहीं समाना, यह तथ कथौ गियानी।"